पाल साम्राज्य: राजनीति, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, कला-संस्कृति

भाग:-1

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सा|||हरसा

सातवीं सदी में हर्ष के साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर भारत और दक्कन में 750 और 1000 ई. के बीच तीन बड़े साम्राज्यों (पाल, गुर्जर-प्रतिहार और राष्ट्रकूट) का उद्भव हुआ. इन तीनों के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष होता रहा लेकिन तीनों ने अपने क्षेत्र में जन-जीवन, ज्ञान-विज्ञान, कला-संस्कृति आदि को स्थिरता प्रदान की. हम इस पोस्ट में पाल साम्राज्य (Pala Empire Dynasty) के राजनीति, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, कला-संस्कृति के बारे में बात करेंगें. प्रतिहार और राष्ट्रकूट साम्राज्य की चर्चा हम किसी अन्य पोस्ट में करेंगें.

पालों ने 750 से 850 ईस्वी तक, लगभग 100 वर्षों तक पूर्वी भारत में वर्चस्वशाली ढंग से शासन किया. सुलेमान नाम के अरब सौदागर के वृतांत से भी पता चलता है की पालों के पास एक बड़ी सेना थी. इनके बारे में 17 वीं सदी में लिखे गए तिब्बती वृतांत से भी जानकारी मिलते है.

राजनीति

पाल साम्राज्य की स्थापना साधारण परिवार में जन्मे गोपाल नामक व्यक्ति ने लगभग 750 ई. में किया. उसके पिता एक सैनिक थे. क्षेत्र के अग्रणी लोगों ने उसके अंदर अराजकता की स्थिति को समाप्त कर सकने की भावी क्षमता को पाया और उसे अपना राजा चुन लिया. उसने अपने नियंत्रण में बंगाल का एकीकरण किया और मगध को भी जीत लिया.

गोपाल का पुत्र धर्मपाल 770 ई. में राजा बना. उसके शासन काल में उत्तर भारत और कन्नौज पर नियंत्रण के लिए प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष होता रहा. उसने इसका फायदा उठाते हुए अपना राज्य विस्तार किया.

उत्तर भारत और कन्नौज पर नियंत्रण के लिए प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट के बीच त्रिपक्षीय संघर्ष होता रहा . पाल और प्रतिहार बनारस से लेकर दक्षिण बिहार तक के क्षेत्र पर नियंत्रण के लिए आपस में टकराते रहे. दक्कन के राष्ट्रकूटो से भी प्रतिहारों का टकराव होता रहा.

प्रतिहार के शासक ने पालों के नियंत्रण वाले बंगाल पर आक्रमण किया लेकिन कोई अंतिम निर्णय हो सकने के पूर्व ही वह दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट शासक ध्रुव द्वारा पराजित हो गया. इसके बाद वह राजस्थान के रेगिस्तान में छुप गया. कुछ समय बाद राष्ट्रकूट शासक ध्रुव भी वापस लौट गया. ऐसे में पाल शासक धर्मपाल के लिए मैदान खाली हो गया. उसने उत्तर भारत की गढ़ कन्नौज पर अपना अधिकार करने के साथ उत्तर-पश्चिम भारत के आखिरी सीमा तक के छोटे-मोटे शासकों को अपने अधीन कर लिया.

पाल शासक धर्मपाल ने कन्नौज सहित उत्तर भारत को अपने नियंत्रण में ले लिया था लेकिन वह इसे स्थायी नहीं बना सका. प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय ने उसे मुंगेर के पास हरा दिया. पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार को लेकर पालों और प्रतिहारों में संघर्ष होता रहा लेकिन अधिकांश बिहार और बंगाल पालों के नियंत्रण में रहा. धर्मपाल ने 810 ई. तक शासन किया.

धर्मपाल का पुत्र देवपाल 810 ई में राजा बना. उसने काफी लम्बे समय (40 वर्ष) तक शासन किया. उसने प्रागज्योतिषपुर (असम), उड़ीसा और नेपाल के कुछ भागों पर पालों का नियंत्रण स्थापित किया.

सुलेमान नाम के अरब सौदागर के वृतांत से पता चलता है की पालों के पास एक विशाल सेना थी. पालों ने 750 से 850 ईस्वी तक, लगभग 100 वर्षों तक पूर्वी भारत में वर्चस्वशाली ढंग से शासन किया.